सं श्रो वि हिसार/115-86/32848—चूंकि हरियाणा के राज्याल की राये है कि मैं. वन राजिक श्रिधकारी सामाजिक वानिक परियोजना, सिरसा के श्रीमक श्री मांगे राम, पुत्र श्री नन्द राम, गांव खैरमपुर, तहसील मण्डी ग्रादमपुर, हिसार तथा उसके प्रवन्धकों के वोच इस में इसके वाद लिखित मामलों में कोई श्रीद्योगिक दिवाद है।

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब सौद्योगिक, विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यभाल इस को द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 को साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 को अबीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवादाग्रस्त या उससे सुसंगत या सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्हां प्रवन्धकों तथा श्रमिक को बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्हा विवाद से सुसंगत ग्रयचा तम्बन्धित है।

क्या श्री मांगे राम भी सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो वि. हिसार/111-86/32854.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि परिवहन स्रायुक्त, हरियाणा चण्डीगढ़, 2. हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा, के श्रमिक श्री किरपाल सिंह, हैल्पर गुन्न श्री सुचा सिंह, मकान नं. 1578, गांव व डा. रानियां, सिरसा तथा उसके प्रवन्धकों के वीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई सौद्योगिक विवाद है।

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विधाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिप्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या नो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुन्गत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री किरपाल सिंह हैल्पर की सेवाग्रों का समापन न्याय नित तथा छोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो. थि. ग्राईडी/भिवानी/105-86/32861-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ 2. हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी के श्रमिक श्री खड़क सिंह, पुत्र श्री किशन सिंह मार्फत श्री भीम सिंह यादव, मकान नं 192, सैक्टर 15, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, श्रीग्रोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रधान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद-ग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री खड़क सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि. रोहतक/57-86/32871.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. रावल इण्डस्ट्रीज बहादुर गढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री होशियार सिंह, पुन्न श्री तेज राम मार्फत ग्रार. एस. यादव प्रधान भारतीय मजदूर संघ रेलवे रोड़, बहादुरगढ़ तथा उसके प्रयन्थकों के बाच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यताल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यनाल इस में द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-अम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की बारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक की विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने होतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तया अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री हो शियार सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?